एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अदरक की फसल में प्रमुख रोग और उपचार

(*महेश कुमार मीमरोट, संजय खर्ते एवं बबली)
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
* mahesh2805.mk@gmail.com

1. प्रकंद सड़न

यह रोग अदरक की पत्तियों पर दिखाई देता है । इस रोग में पत्तियों का रंग हल्का फीका पड़ने लगता है । यह रोग पत्तियों की नोंक से शुरू होकर नीचे की ओर बढ़ता है और फिर पूरी पत्ती को सूखा देता है, तो वहीं कंदों के ऊपर का छिलका स्वस्थ दिखाई देता है । लेकिन अंदर का गूदा सड़ा देता है । इस रोग के प्रकोप को सूत्रकृमि, राइजोम मैगट, कूरमुला कीट बढ़ाते हैं।

2. पीत रोग

इस रोग की शुरुआत निचली पत्तियों के किनारे पीले रंग दिखाई देने से होती है, फिर पूरी पत्तियां पीली होने लगती हैं, लेकिन पत्तियां झड़कर जमीन पर नहीं गिरती हैं. बस पूरा पौधा मुरझाकर सूख जाता है । फसल में यह रोग अत्यधिक आर्द्रता, अधिक तापमान और मिट्टी में अधिक नमी होने के कारण होता है ।

3. पर्ण चित्ती या धब्बा

इस रोग में पत्तियों पर हल्के भूरे या फिर गहरे भूरे धब्बे दिखाई देते है । यह धब्बे मिलकर सभी पत्तियों को रोगग्रसित कर देते है । इसके बाद पत्तियाँ सूख जाती हैं. बता दें कि खुले में उगी अदरक की फसल में यह रोग ज्यादा होता है ।

4. जीवाणुजी म्लानि या उकठा

जब जमीन की सतह के पास धब्बे या पतली लंबी धारियां दिखाई दें, तो इस रोग का प्रकोप जारी होता है । इस रोग में तना और प्रकंद चिपचिपा हो जाता है । साथ ही उनसे दुर्गंध भी आती है ।

उपचार

- फसल की बुवाई के समय अदरक प्रकन्दों को जैव अभिकर्ता *ट्राइकोडर्मा हरजियानम* को पानी के घोल से उपचारित करें ।

- इसके अलावा कार्बेन्डाजिम, मैन्कोजेब, क्लोरोपाइरीफॉस को आवश्यकता अनुसार लगभग 100 लीटर पानी में मिलाकर घोल से उपचारित कर लेना चाहिए।
- अगर जीवाणुज म्लानि का प्रकोप है, तो रसायनों में लगभग 20 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन भी मिला देना चाहिए।
- बुवाई के बाद खेतों में नमी संरक्षण के लिए पुवाल में उन्ही पेड़ों की पत्ती या घास का उपयोग करें, जो अदरक सड़न के रोगाणुओं और कुरमुला कीट को बढ़ाती न हो।
- प्रकंदों को ऊंची मेंड़ों पर लगाएं, जिससे खेतों में पानी इकट्ठा न हो. खेत को साफ़-सुथरा रखें और बुवाई के समय पौधों के बीच उचित दूरी बनाकर रखें।